" कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका "

प्रकृति नें स्वाभाव वश नारी को स्नेह, करूणा, संवेदना, सहिष्णुता, सांमजस्य आदि गुणों से सवाँरा है। और आज नारी केवल घर में ही नही बाहरी दुनिया में भी इसी अजस्त्र प्रेम की धारा बहाती नजर आती है इसी का प्रत्यक्ष रूप उदाहरण है– **कामकाजी महिला**

कामकाजी महिला अर्थात् घर से बहार जाकर या घर में रहकर, कोई भी नौकरी व्यवसाय करने वाली महिला, जो कभी अपने परिवार के लिए, कभी स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए और कभी परिस्थिति वश अपने परिवार व बच्चों के लिए नौकरी या व्यवसाय करती है।

आज के समय में माँ का कामकाजी होना समय की माँग है इसके पीछे कई कारण है एक तो शिक्षित महिला अपनी पहचान बनाना चहाती है व अपने कैरियर के प्रति काफी सजग है। जिसे किसी भी नजरिए से गलत नही कहा जा सकता। दूसरा परिवार की आर्थिक जरुरते बढ़ गयी है। शिक्षा, स्वास्थय और अन्य अवश्यकताओं पर खर्चा इतना बढ़ गया है तो काम करना महिलाओं की जरुरत बन गया है। जहाँ एक ओर भारत मे मध्यम और निम्न वर्ग की महिलाएँ आर्थिक कारणो से काम करती है तो उच्च वर्ग की महिलाएँ अपनी पहचान बनाने के लिए।

चूँकि बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक शैक्षिक और सामाजिक रुप से सशक्त किया है और उनकी हैसियत एंव सम्मान में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद अगर कुछ नही बदला तो वह है महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारी– खाना बनाना, परिवार व बच्चों की देखभाल करना, अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है ।

अतः कामकाजी महिलाओं की स्थिति "दो नावों में सवार" व्यक्ति के समान होती है, क्योंकि एक ओर उसे "ऑक्यूपेशनल स्ट्रेस" या कामकाज का तनाव झेलना पड़ता

है तो दूसरी ओर उसे घरेलू मोर्चे पर भी परिवार को खुश रखने की जिम्मेदारी को निभाना पड़ता है, लेकिन इन दोहरी जिम्मेदारी को पूरा करने के चक्कर मे महिलाऐं अपनी सेहत को अक्सर नजर अंदाज करती है जिसके फलस्वरुप वे पीठदर्द, मोटापा, अवसाद, मधुमेह, उच्च रक्तचाप आदि बिमारियों से ग्रसित हो जाती है क्योंकि ना ही उसके पास व्यायाम करने का समय होता है और ना ही उचित भोजन करने का।

इन सब का प्रभाव उनके बच्चों पर भी पड़ता है वह अपने बच्चों को ना ही पूर्ण रुप से समय दे पाती है ना ही देखभाल कर पाती है, कभी– कभी तो ऑफिस व घर के बीच सामंजस्य बैठाने में कामकाजी महिलाऐं विफल हो जाती है । जिसके कारण वे तनाव में रहने लगती है।

लेकिन द्ढ़ इच्छाशक्ति, समय–प्रबंधन और लगन से हर कार्य संभव है । अपने पति व परिवार का विश्वास जीतकर महिला हर जंग में सफल हो सकती है बशर्ते वह 'समय प्रबंधन' को अपनाऐ और उसके परिवार वाले उसका पूर्ण सहयोग करें।

अगर में अपनी बात करूँ तो मैं यही सोचती थी कि मै नौकरी और परिवार दोनों की जिम्मेदारी कैसे अच्छी प्रकार से निभाँऊगी, कैसे दोनों के बीच में सामजस्यं बैठा पाँऊगी। लेकिन मेरी इस मुश्किल को आसान किया मेरे ससुराल वालों ने और विशेष रुप से मेरे पति ने। उन्होने (पति) घर और नौकरी दोनों की जिम्मेदारी को पूर्ण रुप से निभाने में मेरा कदम–कदम पर साथ दिया। चाहे वह घर के काम हो चाहे बच्चों की देखभाल हो और चाहे नौकरी में आने वाली कोई भी समस्या हो । उन्होंने मुझे मानसिक और शारीरिक रुप से सशक्त बनाने में मेरा पूर्ण सहयोग किया। और यही एक कारण है जो मैं दोनों कार्यों को समय पर भलीभाँति पूर्ण कर पाती हूँ। इसलिए मेरा मानना है, कामकाजी महिला को परिवार का और विशेष रुप से पति का सहयोग मिलना आवश्यक है।

क्योंकि अगर किसी महिला को उसके परिवार खास तौर से पति का सहयोग नही मिलता तो उसके लिए अपनी दोहरी जिम्मेदारियों को निभाना मुश्किल हो जाता है । कभी उसे घरवालों की बातें सुननी पड़ती है कभी पड़ोस, कभी रिश्तेदारों की सभी लोग उसे गलत ठहराते हैं। कुछ महिलाएं ऐसी भी है जो केवल परिस्थितिवश मजबूर होकर नौकरी करती है क्योंकि वे आर्थिक रुप से मजबूत नही होती । उस समय अगर उसे परिवार का साथ न मिले तो वह टूट जाती है और उसके जीवन में परेशानी के सिवा कुछ नही रह जाता । और उसके लिए काम एक बोझ के समान रह जाता है।

लेकिन जहाँ एक ओर कामकाजी महिला को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है । वही बाहर काम करने के कारण महिला के व्यक्तित्व में निखार आता है । उसका बाहरी दुनिया से सम्पर्क बढ़ता है। रोजगार के नए–नए अवसर खुलते हैं जिसका फायदा निश्चित रुप से उसके परिवार और बच्चों को मिलता है। इससे उसे दोहरी जिम्मेदारी जरुर उठानी पड़ती है, लेकिन साथ ही उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है ।

साथ ही माँ का कामकाजी होना बच्चों की अच्छी परवरिश के लिए बेहतर है इससे उन्हे अच्छे स्कूल में शिक्षा, बेहतर सुविधाएँ मिलती है और ऐसा नही है कि जो महिलाएँ काम करती है वे बपने बच्चों से प्यार नही करती वे उनके लिए ही तो काम करती है। महिलाओं के कामकाजी होने का एक सकारात्मक पहलू यह भी है कि इससे वे आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनती है और परिवार में उनका सम्मान बढ़ता है यह भी देखने को मिलता है कि महिला के कामकाजी होने से घरेलू हिंसा में भी कमी आती हैं।

अतः मेरा मानना है कि अगर कामकाजी महिला को अपने परिवार और विशेष रुप से पति का पूर्ण सहयोग मिले तो वह अपनी दोहरी भूमिका को अच्छे प्रकार से निभा सकती है।

खुशबू माहेश्वरी
जिला सहारनपुर
पश्चिमी उत्तर प्रदेश